

२६

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—१ हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

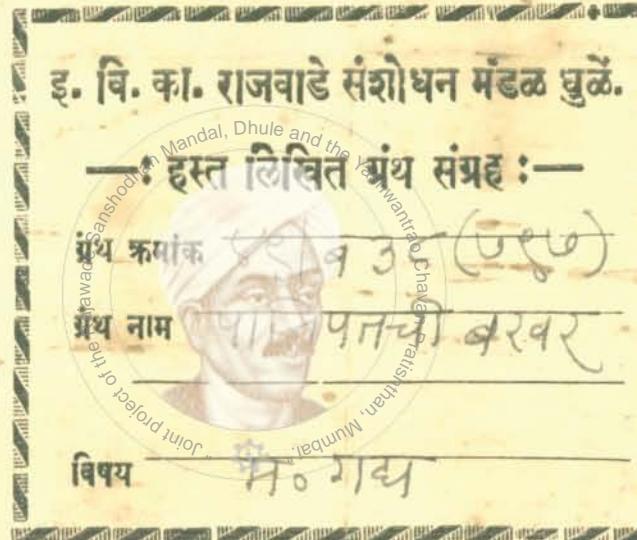
ग्रंथ नाम

विषय

१९३५ (पृष्ठ)

पतंको बरवर

ग. गद्य













दिव्यानन्दप्रसादस्तु उत्तमं प्रसादं अन्तर्मुखं  
जटोगुम्बेदादृष्टवाच्छब्दाभ्युच्छपुष्टे  
॥ ११ ॥ इति विवेकार्थात् श्रीकृष्णभाषण  
स्वयानमहिताद्येवं तादृशेत्तु जिम्पकाद्य  
प्राप्तं वाहनं गारावं त्रिक्षेत्रं त्रेतावाणी  
चैत्रधूमीज्ञानाभ्युच्छप्तयेत्तु लायत्तेव  
उद्धृतीत्तेव त्रिपुरात्तेव त्रिपुरात्तेव  
मायानुभवीत्तेव त्रिपुरात्तेव त्रिपुरात्तेव  
लाक्ष्मीप्रदीप्तात्तेव त्रिपुरात्तेव त्रिपुरात्तेव  
उक्तिवेत्तेव त्रिपुरात्तेव त्रिपुरात्तेव

संस्कृत लिपि द्वारा लिखी गयी है। यह लिपि अपने अलग-अलग भागों में विभिन्न रूपों में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा, यह लिपि कालांक और अन्य संस्कृत लिपियों के अवधारणाओं का भी प्रभाव ले रही है।

निरुद्धरीष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुल  
धार्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुल  
स्त्राव्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुल  
क्षम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुल  
स्त्राव्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुलभृत्युक्तिराम्भिरुद्धरिष्टिरूपेष्टुल



क्रुपामारीचरित्रेच्छमिक्षेन  
द्वायायोजनेश्वरायपातवापत्तेस्  
तेजीश्वरायपूर्वभेराद्विभेदा  
स्त्रियामेश्वरायपूर्वाय  
चर्वीश्वरायपातवापत्तेस्  
रायस्त्रियपूर्वेष्वरायपातवापत्तेस्  
१५ रायत्वायपातवायपातवायपातवाय  
युज्ञेष्वरायपातवायपातवाय  
नस्त्रियायपातवायपातवाय  
तायपातवायपातवायपातवाय  
क्षेष्वरायपातवायपातवाय  
श्वरायपातवायपातवाय  
उष्ट्रायपातवायपातवाय  
चन्द्रपूर्वेष्वरायपातवायपातवाय  
द्वीर्यायपातवायपातवाय  
स्वत्वायपातवायपातवाय  
क्षेष्वरायपातवायपातवाय  
१६ एवं अप्यत्वायपातवायपातवाय  
वहन्ति विष्णुविष्णुविष्णुविष्णुविष्णु  
रघुविष्णुविष्णुविष्णुविष्णुविष्णु  
द्वेष्वरायपातवायपातवाय  
व्याकायपातवायपातवाय  
नेत्रायपातवायपातवाय  
शृङ्गायपातवायपातवाय  
द्वायपातवायपातवाय  
क्षेष्वरायपातवायपातवाय  
विष्णुविष्णुविष्णुविष्णुविष्णुविष्णु

कायतैर्यमिति परमिताप्रदानं च पार्वती  
विश्वामित्रमुद्देश्यतां प्रस्तुता एव

କୁରୁତେବେଳେ ପାଦିଲା ଯାହା ଏହାରେ  
କୁରୁତେବେଳେ ପାଦିଲା ଯାହା ଏହାରେ

स्तागतम्भिरुद्धारणम् ॥४॥

କୁଣ୍ଡଳେଖିରୁ ଧରୁପଦେଶରୁ ଧରୁଲେ

~~द्विद्वयान्तेऽस्मलोकान्प्रदर्शन~~

ପ୍ରତିକାଳିକ ମହାନ୍ତିରାଜୀବିନ୍ଦୁରେ  
ପ୍ରତିକାଳିକ ମହାନ୍ତିରାଜୀବିନ୍ଦୁରେ

१२ एवं विद्युत विकास के लिए जल संसाधनों का उपयोग करना चाहिए।

କେବଳ ମନରୀତିରେ ଏହାରୁଥିଲା

एषोरात्मकम् विरचयेन्द्रो लोहसी गुप्तम्

मात्रपत्रोगुणवस्त्रमिष्टिणा  
२०१०-११ अक्टूबर २०१० पृष्ठ ४

त्वं त्रिपुरां च न जाह्नन्ति अवाग्निः ।  
उविष्टु ब्रह्मा एव दग्धिष्ठुष्टु पूर्वोमे

३० अप्रृष्ट विषयों की समस्याएँ

ହୋଲାମରାଧି ଧିନ୍ଦା ଓ ଯଶ୍ଵର

*The Royal  
Society  
of London  
for Improving  
Natural  
Knowledge*

८०३२४ मार्च १९८५ दिन परमार्थ केन्द्र के संस्थापक  
जीवन मुद्रा वित्तीय संस्कारण के द्वारा जारी

३५४ चूर्णवल्लभाचार्य

ଶ୍ରୀପାତ୍ରବିଜୁଲିମଦାନ୍ତା

३५४ अस्ति विद्युते विद्युते विद्युते विद्युते

କେତେବେଳେ ପାଦମଧ୍ୟରେ ଯାଏନ୍ତି

~~ଶାର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଠାତ୍ମକାମିନୀରୁହିନୀରୁ~~  
~~ଶାର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଠାତ୍ମକାମିନୀରୁହିନୀରୁ~~

~~କୁର୍ମାଦୟରାଜୁବନ୍ଧୁମହାତ୍ମା~~

~~त्रिवृत्तान्तेष्टिरुद्धरणम्~~

~~मनसाद्वयविभूतिमात्राप्लक्ष्य~~

४३८ श्रीमद्भागवतप्रसाद  
४३९ श्रीमद्भागवतप्रसाद















<u>ମୁଖ୍ୟ</u>	→	<u>ଜାତି</u>
୧ ଘର୍ମନ୍ତିକାମଣେତ୍ର	୧	ମୋଟିରୀ
୧ ଗାଁ ଛିନ୍ଦିଭାଇୟ	୧	ଘର୍ମନ୍ତିକାରୀ
୧ ହରାଜାପାନ୍ଥୀ	୧	ଲାଲପନ୍ଥୀ
୧ ରାଜାପାନ୍ଥୀ	୧	ଶୀଳିପ୍ରଧାନ
୧ କ୍ଷେତ୍ରପାନ୍ଥୀ	୧	ଅଧିକାରୀ
୧ କ୍ଷେତ୍ରପାନ୍ଥୀ	୧	ନିଧିପଂଦୁ



१) राजीवगो	१) विष्णुपादे
१) लक्ष्मीन	१) राजीवलक्ष्मी
१) लक्ष्मीमाता	१) राजीवलक्ष्मी
१) दासंजपुदि	१) राजीवलक्ष्मी
१) चतुर्भूपालद्व	१) चतुर्भूपालद्व
१) नायमिश्र	१) चान्दीमो
१) दुष्मिष्ठार	१) चाहूलिकार
१) गुणेन्द्रियसंचेत	१) चरीनलजपुत
१) हराजानीपंचार	१) चीरडी
१) गणेशचरनि	१) छातीरगोप
१) उत्तिष्ठिपंचार	१) चीकोपाट
१) छटिपालनि	१) छारकी
१) प्राणिकं	१) कृष्णद्वय
१) जीरारचनि	१) करधारिद्वय
१) द्वारिकापाल	१) केतुषीणार
१) चतामण्ड	१) कोशिकं
१) गर्वानिकं	१) चोदनिका
१) उद्देशिनो	१) अजनीघेश्वरी
१) उक्तिशिवार	१) उक्तिशिवार
१) माता	१) उक्तिशिवार
१) दाक्षेश्वरकं	१) उक्तिशिवार
१) अपालिका	१) उक्तिशिवार
१) चतामार	१) उक्तिशिवार
१) घृतमालार	१) उक्तिशिवार
१) नामांतर	१) उक्तिशिवार
१) (38)	१) उक्तिशिवार
१) लैलाकोइद्दम्भपुराज्ञारेहाय	१) उक्तिशिवार

नाराजेपद्मवायां च एष तत्त्वम् एपाष वाय  
एष निराप्ते एव वाय त्वं च अकाशं त्रिभूमि  
स्तुत्य एव च इति विषया परथात् देवता मी  
च एव दिव्या विषयो त्वं कृप्ते लक्ष्मी विषया  
तम् एव द्वैष्ट विषयां धृती विषया लक्ष्मी विषया  
द्वैष्ट विषयां धृती विषया लक्ष्मी विषया  
लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया  
लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया  
ग्रुपुष्टि विषया लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया  
लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया  
लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया लक्ष्मी विषया



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)